## । [ऽथा-]-नुशयो " [दीर्घद्वषानुतापयोः]।

- 2 स्थूलोच्चयस् [त्व् ऋसाकल्ये गजानां मध्यमे गते]॥ १५०॥
- उ समयाः [शपथाचार्कालिसद्वान्तसंविदः]।
- 4 [व्यसनान्य् ऋषुभं देवं विषद् इत्य्] ऋनयास् [त्रयः] ॥ १५१ ॥
- 5 ऋत्ययो [ऽतिक्रमे कच्छे दोषे दण्डे ऽप्य्]
- 6 अथापिद।
- 7 युद्धायत्योः] सम्परायः
- 8 पूज्यस् [तु श्वश्रु ऽपि च]॥ १५२॥
- 9 [पश्चादवस्थायि बलं समवायत्र् च] सन्नयौ।
- 10 [संघाते सिन्नवेशे च] संस्त्यायः
- 11 प्रणयास् त्वमी ॥ १५३ ॥
- 12 विस्नम्भयाज्ञाप्रेमाणो]
- 13 [विरोधे ऽपि] समुच्छ्यः।
- 14 विषयो [यस्य यो ज्ञातस् तत्र शब्दादिकेष् ऋषि]॥ १५४॥
- (1) 1° Vieille inimitié; 2° repentir.—(2) 1° État de ce qui est incomplet; 2° pas moyen d'un éléphant, ni rapide ni lent; [3° éminence au pied d'une montagne].—(5) 1° Serment; 2° usage; 3° temps; 4° conclusion démontrée; 5° convention, marché; [6° avis, signe; 7° loisir].—(4) 1° Vice; 2° mauvaise fortune; 3° calamité.—(5) 1° Transgression; 2° détresse; 3° faute, crime; 4° punition par l'amende, etc.—(6, 7) 1° Calamité; 2° guerre; 3° temps futur, avenir.—(8) 1° m. Beau-père; [2° précepteur; 3° m. f. n. digne de respect].—(9) 1° Arrière-garde; 2° multitude.—(10) 1° Assemblage; 2° voisinage; [3° maison].—(11, 12) 1° Connaissance; 2° sollicitation; 3° affection.—(15) 1° Inimitié; [2° élévation, hauteur].—(14) 1° Fréquenté et connu; 2° objet des sens, comme

मन्त्रायः.